मंथन समूह सफलता की कहानी...

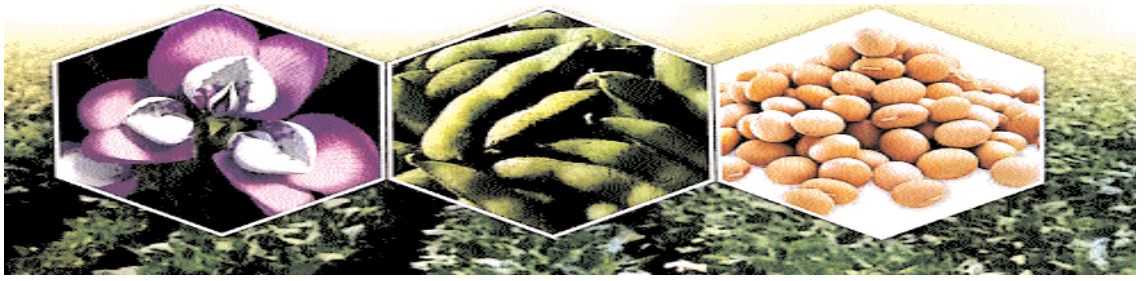

---प्रेरणादायक किसानों की सफल गाथाएं---

किसान मुकेश रैकवार ने वैज्ञानिक डेयरी पद्धति को अपनाकर एक किसान दुग्ध उत्पाद के रूप में अपनी ताकत साबित कर दी

मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के ग्राम सेवनिया के निवासी मुकेश रैकवार पारंपरिक रूप से डेयरी किसान हैं। उनके पास कुछ एकड़ जमीन है, जिसमें उनका घर और मवेशीखाना भी शामिल है। मुकेश रैकवार कम लागत में अधिक दुग्ध उत्पादन किया है। उन्होंने मंथन ग्रामीण समाज सेवा समिति के क्षेत्राधिकारी श्री राजेश वर्मा जी की सहायता से मवेशी अनुसंधान संस्थान, सीहोर के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। उन्हें मवेशियों के प्रजनन और आहार सुधार पर केंद्रित वैज्ञानिक डेयरी फार्मिंग पर एक कार्यक्रम में भाग लेने की सलाह दी गई। बाद में उन्होंने उसमें भाग लिया। उन्होंने 4 भैंसों के साथ 35 लीटर प्रतिदिन के औसत उत्पादन के साथ अपना डेयरी व्यवसाय शुरू किया। बहुत जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि डेयरी उद्योग जमीनी स्तर पर बिल्कुल भी संगठित नहीं है और किसानों को उनके द्वारा उत्पादित दूध का सही मूल्य नहीं मिल रहा है।

वर्तमान में उनके पास लगभग 20 भैंसे हैं दूध का अच्छा उत्पादन करती हैं उनके पूरे फार्म ऑपरेशन का प्रबंधन बायोगैस जेनरेटर सेट के माध्यम से किया जाता है और पूरे गाय के गोबर का उपयोग उनके अपने फार्म में नियमित कृषि के लिए किया जाता है, जिससे रासायनिक उर्वरकों का पूरी तरह से स्थानापन्न हो जाता है।

20 भैंसों की मदद से आज उनका सालाना कारोबार 10 लाख रुपये है। आज श्री मुकेश रैकवार ने वैज्ञानिक डेयरी को अपनाकर एक किसान के रूप में अपनी ताकत साबित कर दी है और अपने ज्ञान और अनुभवों को दूसरे किसानों के साथ साझा करके खुश हैं। क्योंकि उनका मानना है कि उत्पादक की ताकत, जब वैज्ञानिक खेती और विपणन कौशल के साथ मेल खाती है, तो इस देश में बेहतर ग्रामीण विकास का एकमात्र तरीका है।

रोजगार

मंथन पॉलीटेक्निक कॉलेज
इंदौर-भोपाल हाईवे पुलिस चौकी के पास अमलाहा सीहोर, (म.प्र.)
(एआईसीटीई, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित)

पॉलिटेक्निक (डिप्लोमा इंजीनियरिंग)
इलेक्ट्रिकल (इंजी.) (E.E.)
सिविल (इंजी.) (C.E.)
मैकेनिकल (इंजी.) (M.E.)
कंप्यूटर साइंस (इंजी.) (C.S.E.)
इलेक्ट्रॉनिक एवं टेली कम्यूनिकेशन (इंजी.) (E.C.E.)

– : विशेषताएं :–
■ शत् प्रतिशत रोजगार के सुनहरे अवसर।
■ सुव्यवस्थित वर्कशॉप तथा आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का अवसर।
■ उत्तम गुणवत्ता का प्रशिक्षण।
■ छात्रों को भविष्य निर्धारित करने का मौका।
■ न्यूनतम शुल्क पर छात्रावास की सुविधा।

न्यूनतम योग्यता: 10वीं/12वीं कक्षा उत्तीर्ण

छात्रवृत्ति
● अल्पसंख्यक/अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा।
● अल्पसंख्यक वर्ग की छात्रवृत्ति के लिए 10वी/12वीं में 50 प्रतिशत अंक आवश्यक।

प्रदेश की एकमात्र संस्था जो प्रशिक्षण के उपरांत 100% रोजगार प्रदान करती है

अपना उज्जवल भविष्य निर्धारण करने के लिए सम्पर्क करें : मंथन पॉलिटेक्निक कॉलेज-मो.623200930

अमरूद की बागवानी, किसान राजाराम श्रवण के लिए बनी मुनाफे का सौदा

किसान राजाराम श्रवण मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के अंतर्गत ग्राम पंचायत दस्नावल ब्लॉक सेगांव के रहने वाले हैं, 52 वर्षीय राजाराम श्रवण ने अपने खेत में अमरूद की बागवानी शुरू की। श्री राजाराम श्रवण को खेती करते हुए लगभग 10 से 12 वर्ष हो गए हैं। लेकिन इस बार किसान राजाराम श्रवण ने लीक से हट कर खेती करने के बारे में सोचा। अनाज उगाने की जगह उन्होंने फलों की खेती से मुनाफ कमाने की सोची

उनका कहना है कि उन्हें अमरूद की बागवानी की प्रेरणा खरगोन जिले के मंथन समाज सेवा के क्षेत्र अधिकारी श्री संदीप सोलंकी के माध्यम से प्राप्त हुई। मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना से जुड़ने के बाद किसान आधुनिक पद्धति के तरीके से अमरूद की बागवानी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सभी प्रकार की जानकारियों से अवगत हो कर तथा परियोजना के साथ जुड़कर इस क्षेत्र में कदम रखा। अमरूद खेती के बारे में जागरूक होकर नये नये तरीकों से परिचित होकर उच्च पैदावार वाले अमरूद की कलमों की जानकारी के साथ उसकी समय पर देख रेख व समय-समय पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर बीमारियों का सही समय पर प्रबंधन कर किसान राजाराम श्रवण अपने फार्म हाउस में अमरूद के 100 से ज्यादा पेड़ लगवाए और अमरूद की बागवानी की उत्पादकता को बढ़ाया।

किसान राजाराम श्रवण अपनी मेहनत और सही तकनीकों के जरिए खेती में बदलाव लाने की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ा रहे हैं। खरगोन जिले में जहां पारंपरिक खेती में कई चुनौतियां सामने आती हैं, वहीं बागवानी और खासकर अमरूद की बागवानी के जरिए किसानों को तगड़ा मुनाफा हो सकता है। किसान राजाराम श्रवण की कहानी इस बात का जीता जागता उदाहरण है कि अगर बागवानी को सही तरीके से किया जाए, तो यह घाटे का नहीं, बल्कि एक बड़े फायदे का सौदा साबित हो सकती है। किसान राजाराम श्रवण का फार्म हाउस अब एक सफल अमरूद बागवानी का उदाहरण बन चुका है। उन्होंने अपने फार्म हाउस में अमरूद के 100 पेड़ लगवाए। यह पेड़ लगभग सात से आठ महीने में तैयार होकर फल देने लगते हैं और इसके बाद हर पेड़ से भारी मात्रा में आमदनी हो सकती है। अगर इसके खर्च की बात की जाए, तो एक पेड़ को लगाने, उसकी देखभाल और अन्य गतिविधियों में लगभग 1000 रुपये का खर्च आता है। लेकिन इस खर्च के मुकाबले जो मुनाफा मिलता है, वह कहीं ज्यादा होता है।

अमरूद के एक पेड़ से एक सीजन में करीब 10,000 रुपये की आमदनी हो जाती है। अब अगर 100 पेड़ों की बात करें तो एक सीजन में लाखों रुपये का मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है। बागवानी के इस तरीके से न केवल स्थानीय किसानों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है, बल्कि यह क्षेत्र के विकास में भी अहम योगदान दे सकता है।

किसान राजाराम श्रवण के फार्म हाउस पर काम कर रहे व्यक्ति ने लोकल 18 से बातचीत करते हुए बताया कि यह बागवानी राजाराम श्रवण के द्वारा की जा रही है। उन्हें मंथन समाज सेवा समिति के माध्यम से बागवानी के बारे में जानकारी मिली और इसके बाद उन्होंने 100 से ज्यादा पेड़ मंगवाए और फार्म हाउस में लगवाए। पेड़ लगभग 7 से 8 महीने में तैयार होते हैं और एक सीजन में एक पेड़ से 10,000 रुपये की आमदनी हो जाती है।

खरगोन जिले के किसान जो पारंपरिक खेती से परेशान हो चुके हैं, उनके लिए अमरूद की बागवानी एक वरदान साबित हो सकती है। सही देखभाल और तकनीकी जानकारी के साथ इस बागवानी से न केवल बेहतर आय हो सकती है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र में खेती के नए आयाम स्थापित कर सकता है। राजाराम श्रवण जैसे किसान यह साबित कर रहे हैं कि अगर सही दिशा में काम किया जाए, तो खेती सिर्फ एक रोजगार का साधन नहीं, बल्कि एक बड़ा मुनाफा भी हो सकती है।